समकालीन साहित्य और स्त्री विमर्श

डॉ० नम्रता जैन

अनुक्रमणिका

1. आधुनिक युग संदर्भ में समकालीन साहित्य और स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता 01
डॉ. नम्रता जैन

2. नई सदी में नारी साहित्यकार और स्त्री विमर्श अनामिका की कविताओं के विशेष संदर्भ में 06
डॉ. सुरेश कुमार बैरागी

3. समकालीन लेखिकाएँ एवं मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री-विमर्श 16
डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह, कु. किरन

4. करवट बदलते रिश्तों की तलाश: 'सपनों की होम डिलिवरी' में 25
डॉ. चित्रा. वी. एस

5. समकालीन साहित्य में स्त्री का स्वरूप 32
निवेदिका कुमारी

6. सिनेमा और दलित स्त्री 38
मुकेश कुमार मिरोठा

7. समकालीन काव्य साहित्य में स्त्रीवादी लेखन 49
डॉ. (सुश्री) राणी बापू लोखंडे

8. हिन्दी साहित्य में नारीविमर्श: दशा और दिशा 101
अभिजीत मोहन

9. समकालीन लेखिकाओं की कहानियों में स्त्रीवाद 106
डॉ संगीता ठाकुर

10. मंजुल भगत के कथा साहित्य में नारी चरित्र का बदलता स्वरूप 114
अंजुललित

10

मंजुल भगत के कथा साहित्य में नारी चरित्र का बदलता स्वरूप

अंजुललित"
हिंदी-शोधार्थी"
कु.मायावती स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर,गौतमबुद्ध नगर (उ०प्र०)

सारांश

मंजुल भगत का जन्म 22 जून 1936 को हुआ था। इनके हिंदी में ग्यारह कहानी संग्रह, सात उपन्यास और अंग्रेजी भाषा में दो कृतियां छपी। इनकी पहली पुस्तक 'गुलमोहर के गुच्छे और अंतिम पुस्तक 'बूंद'दोनों 1998 के विश्व पुस्तक मेले में लोकार्पित की गई थी। 1976 में प्रकाशित इनका अनारो उपन्यास जिसने हिंदी साहित्य में इन्हें अमर बना दिया। 'अनारो' उपन्यास ने देश विदेश में ख्याति प्राप्त की। इसका जर्मन में अनुवाद किया गया। इनकी कहानियों का अनुवाद अंग्रेजी के अलावा मराठी, उर्दू, जापानी, बुल्गारियन तथा रूसी भाषाओं में भी किया गया। इनके उपन्यास में नारी भावुक, स्वाभिमानी, कभी हार न मानने वाली किसी से ना डरने वाली, मेहनती, अपने काम पर भरोसा करने वाली पति को सही रास्ते पर चलाने वाली अनेक रूपों में स्त्री का बदलता रूप दिखाई दे रहा है। आज वह अपने संघर्ष से सभी ऊंचाइयों को छू रही है। फिर चाहे वह मैरी कौम हो, जो तीन बच्चों की मा होकर भारतवर्ष में अपना परचम लहरा रही है, या फिर चंदा कोचर जिन्होंने अपने मेहनत विश्वास और लगन से पुरुष प्रधान बैंकिंग क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई। इसलिए आज की स्त्री कहती है कि उसे राम की सीता नहीं बनना। कृष्ण की राधा नहीं बनना। बस उसे खुला आसमान चाहिए जिसमें वह

स्वतंत्र रूप से उड़ सके और अपनी पहचान बना सके। मंजुल भगत के कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके नारी पात्र परिस्थितियों से विद्रोह करती हैं। परत् मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती। 31 जुलाई 1998 को इन्होंने ससार और हिंदी साहित्य को "अलविदा कह दिया।

प्रस्तावना

स्त्रियों की दुनिया में पुरुषों को कोई विशेष रुचि नहीं है, इसलिए स्त्रियों ने यह बीड़ा स्वयं उठाया कि वह अपनी सामाजिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति को बदलें। आज वह किसी भी तरह पुरुष के विरुद्ध या विद्रोह में नहीं खड़ी है। बल्कि कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए तैयार है। स्त्री को उस पुरुष जैसा नहीं बनना ,बस वह तो अपनी पहचान बनाना चाहती है। आज स्त्री स्वप्न देखती है और उस स्वप्न को पूरा करने की हिम्मत भी रखती है। क्योंकि वह यह बात भली-भांति जान चुकी है कि हम स्त्रियां पुरुष का कितना भी विरोध करें, किंतु अंत में वह हमारा ही पिता ,भाई या जीवनसाथी है। समाज में रंग,रूप,लिंग और जन्म के आधार पर स्त्री के साथ भेदभाव के बीज इस उर्वर भूमि में इस प्रकार से रौपे गए हैं कि उन्हें बदलना एक जटिल कार्य है। इसलिए आज स्त्री उस ऊंचाई पर पहुंचने के लिए कोशिश कर रही है जहां पहुंचने के लिए हमेशा उसे रोका गया। स्त्री की जिजीविषा और अस्तित्वबोध उसके चरित्र को बदलने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। स्त्रियों की मानसिक स्थिति का प्रकृति के साथ सामंजस्य उसे ओर अधिक मजबूत बनाता है। आज नारी खोखले आदर्शों में नहीं जीती,अगर उसके जीवन में समस्याएं हैं तो उसका समाधान भी वह स्वयं करती है।

नारी चरित्र का बदलता स्वरूप -- मंजुल भगत के नारी पात्रों का स्वरूप आत्मविश्वास से परिपूर्ण,स्वावलंबी तथा अपने परिवार को प्राथमिकता देने वाली महिलाओं का चरित्र उजागर करता है। इनका अंतिम उपन्यास 'गंजी' 1995 में प्रकाशित हुआ। इसकी मुख्य पात्र गंजी अपनी कहानी स्वयं रचती है।वह निम्न परिवार की स्त्री है। जिसका पति किसी दूसरी के साथ रहता है ऐसे में भी वह धैर्य बनाए रखती है और अपने घर-परिवार को नहीं टूटने देती। गंजी अपनी मां अनारो

से कहती है - "अम्मा, औरत में कालजा जिगरा हो,होर वह सही रस्ते पे चलके कमाऊं-कामयाब हो जाए तो जमाना उसकी कदर करें।" एक छोटी सी सिलाई मशीन से 'शांति टेलरिंग हाउस' और फिर बहुत बड़ा 'बुटीक आंखमिचौली' खड़ा कर देती है। जिसके सामने उसका पति मनहर भी झुकने को मजबूर हो जाता है और वह वापिस उसके पास लौट आता है। 'अनारो' उपन्यास जिसमें अनारो शराबी और नक्कारा पति के साथ रहती है अनारो एक जिजीविषा और संघर्षशील स्त्री है उसे जीवन से भरपूर लगाव है। पति से उत्पीड़ित, घरों में चौका बर्तन करने वाली अनारो जीवन के प्रति उसका उत्साह देखते ही बनता है। दुनिया भर की ठोकरें खाने के बावजूद भी वह जिंदगी को अपने तरीके से जीती है। आज स्त्रियों में अपने अस्तित्व के प्रति जागृति तथा चेतना दिखाई दे रही है। स्त्रियों में आत्मनिर्भरता और स्वच्छंदता की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है इसका प्रमुख कारण शिक्षा है। जिसके फलस्वरूप वह पारिवारिक हिंसा का विरोध करने लगीं। मंजुल भगत ने अपनी कहानियों 'नालायक बहू','खोज','निशा', 'संबंधहीन', 'तीसरा अस्तित्व', 'बानो','भग्नाशेष', 'पारूल के लिए' आदि कहानियों में अस्तित्व के प्रति जागृत होती नारी का चित्रण किया है। 1984 में प्रकाशित 'तिरछी बौछार' उपन्यास विस्मिता अर्थात विसु ऐसी स्त्री की कहानी है जिसने हमेशा अपने परिवार को प्राथमिकता दी,जो कि अब प्रौढ़ हो चुकी है और वह इस आयु को अद्भुत बनाना चाहती है। इसलिए विसु अपने वह सारे सपने पूर्ण करना चाहती है जो अधूरे रह गए थे। वह कल्पना एडवरटाइजिंग एजेंसी में सीनियर कॉपीराइटर का स्थान प्राप्त करती है।और बहुत लगन के साथ काम करती है। तथा वह अपने भ्रम को स्वयं ही दूर करती है जिसे अब तक लगता था कि स्त्री घर की चारदीवारी में ही सुरक्षित है,।"वह सोचती है स्वयं की अर्जित की हुई सफलता ही वह कांति है, जो सफल पुरुष के अंग-प्रत्यंग से सम्मोहन शक्ति-सी फूट पड़ती है। तभी न, बढ़ती उम्र में पुरुष और अधिक सफलता के पीछे उतनी ही उत्कृट व्यग्रता से दौड़ने लगता है, जितना एक अधेड़ सुंदरी अपने यौवन के पीछे।" वह अपनी लगन, प्रतिभा और मेहनत से यश और मान का छोटा सा दायरा अपने चारों ओर बना लेती है। उस सम्मान से उसके भीतर का व्यक्ति कैसा जी उठा था। इंसान के पास यदि कोई संपत्ति न हो,न कोई ताला न चाबी,बस एक मुक्त सा अस्तित्व हो, कभी न मर मिटने वाला,तभी वह भाग्यशाली है। इस उपन्यास का अंत भी इस

प्रकार होता है- "बढ़ी चलो, विसु, मुट्ठियों मे राख लिए इसी पथ पर ।आगे,और आगे चाहे तुम्हारा मन अन्य सभी अनुभूतियों से खाली ही क्यों न हो जाए। यह कर्म की दुनिया हैं, और कर्मकांडी भावनाओं में कैद नहीं रहता।"मंजुल भगत ने नारी को अपना अस्तित्व पहचानने, बिना किसी सहारे के,तथा परिवार को छिन्न-भिन्न किए बिना ही एक अलग पहचान देने का प्रयास किया। लेखिका ने एक शिक्षित घरेलू मध्यवर्गीय स्त्री के मन में 'स्व' अतीत का प्रश्न निर्माण करके उसकी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

अपने पहले ही उपन्यास में वैवाहिक जीवन और घर के बंधनों के साथ अपने प्रेम को उन्मत्त होकर जीने का अवसर दिया। बिना इसकी चिंता किए पति,संतान और समाज की क्या प्रतिक्रिया होगी।कमल किशोर गोयनका मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य में लिखते हैं लेखिका स्त्री को यह आजादी देना चाहती है। परिवार विवाह की मर्यादा में भी वह अपने प्रेम संबंधों को के लिए स्वतंत्र है। मंजुल भगत के स्त्री पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पात्र विसंगति में जीते हुए भी किसी प्रकार के अपराध बोध और कुंठा से मुक्त हैं नारी के साथ अपराध बोध का जो मिथक बना हुआ था वह नारी पात्रों में नहीं मिलता। 'टूटा हुआ इंद्रधनुष' उपन्यास में मध्यवर्गीय समाज में पाश्चात्य अनुकरण की प्रवृत्ति दिखाई देती है। उपन्यास की नायिका शोभना आधुनिक विचारों की स्त्री है। पति के साथ रहते हुए भी प्रेमी के साथ संबंध बनाए रखना तथा उस से उत्पन्न संतान को पति का नाम देना अस्वाभाविक बात लगती है। लेखिका ने मध्यवर्गीय स्त्री के बदलते विचारों के कारण उसके बदलते परिवेश को दिखाया है वह स्वच्छंद तथा मुक्त जीवन जीने लगती है। परंतु इस प्रकार का जीवन जीना आसान काम नहीं है। मंजुल भगत ने शोभना के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि भारतीय स्त्री कितनी भी आजाद ख्यालात की क्यों न हो किन्तु उसके मन में कहीं ना कहीं पतिव्रता बने रहने की बात रहती ही है।

आज की बदली हुई तथा अपेक्षया अनुकूल परिस्थितियों में नारियां स्वयं को बदलने और पुरुष प्रधान समाज द्वारा रचित बेड़ियों से स्वयं को स्वतंत्र करा रही हैं। स्वतंत्र जीने से मतलब सदियों से चले आ रहे रहन-सहन व आचार-व्यवहार के हर नियम को बस चुनौती चुनौती देना है।वह रूढ़ि परंपराओं से मुक्ति चाहती

हैं। मगर अपने दायित्व और संस्कारों से नहीं भागती।निशा' कहानी में निशा को बचपन से ही उसके माता पिता ने उसे लाड-प्यार नहीं किया था। क्योंकि वह चौथे नंबर की बेटी थी।परिवार ने हमेशा उसके आत्मविश्वास को कमजोर बनाए रखा। "तब उसके मन में भी प्रबल इच्छा उठती कि वह ऐसा कुछ अद्भुत कर डाले कि सब लोग चौंककर उसकी ओर देखने लगें।"जब निशा की जीजी अपने लिए लड़का स्वयं पसंद कर लेती हैं। तब वह कहती है चलो अच्छा है।"नहीं तो उनकी भी दुकान सजाकर बार-बार उन्हें लड़के वालों को दिखाया जाता, वह तो स्कूल के ओरल टेस्ट से भी अधिक बुरा है।"माता-पिता,दादी और रिश्तेदारों की और अवहेलना सहते हुए भी निशा कभी भी हंसना नहीं छोड़ती। "निशा शीशे में हंसकर देखती। उसके दांतो के बीच कहीं-कहीं खाली जगह थी। कोई-कोई दांत पटरी से हटकर ऊंचा-नीचा भी पड़ता है। हुआ करे,हंसे,बगैर तो वह एक दिन भी नहीं जी सकती।" निशा सर्वप्रथम लाइम-लाइट में तब आई,जब अचानक उसका हायर सेकेंडरी का परीक्षा फल घोषित हुआ उसने अच्छे नंबरों से प्रथम श्रेणी प्राप्त की थी। जब समाज उसकी प्रशंसा कर रहा था उस समय भी उसकी मां ने "निश्वास खींच कर बोली, "काश, हमारी निशा लड़का होती।"पर निशा ने तो ठान लिया था कि उसे जिंदगी में कुछ कर दिखाना है। फिर उसने बीए और एमए में आदतन फर्स्ट क्लास हासिल की। वह "अपनी प्रतिभा की प्रशंसा सुनने को इस प्रकार लालायित रहती, जैसे कोई नायिका हॉल में तालियों की गुंजार सुनने को आतुर रहती हो।" वह सफलता की उच्चतर सीढ़ियां पर चढ़ती चली जाती है। पी-एच०डी० की स्कॉलरशिप पर वह घर से कोसों दूर अमेरिका चली जाती है। वह दिशा नहीं खोजती। स्वयं एक मजबूत नौका है, जो तूफान में राह बनाती है। निशा अपने हारे हुए आत्मविश्वास को जीत में बदल कर आगे बढ़ती है और मां का सहारा बनती है ।तब मां भी गर्व से कहती है -" तो ही तो मेरे बुढ़ापे का आसरा है बेटे!"

मंजुल भगत का बहुचर्चित उपन्यास 'अनारो' की नायिका निम्न वर्गीय समाज से संबंध रखती है। वह महानगर की झुग्गी कॉलोनियों में रहकर कोठियों में काम करने वाली महिला है जो बहुत ही ईमानदार,आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी तथा रूढ़ि प्रिय है। उसका पति कामचोर और भगोड़ा है उसे अपनी जिम्मेदारियों का लेश

मात्र भी एहसास नहीं है।परायी स्त्री के साथ रहता है। शराब पीना,झगड़ा करना,घर से भाग जाना उसके जीवन का हिस्सा था। फिर भी अनारो कभी भी उस से रुष्ट नहीं होती थी। हमेशा उसका आने का इंतजार करती थी।उसकी दशा देखकर मास्टरनी उससे कहती है मैं एक ऐसी संस्था को जानती हूं जो तुम्हारी बेटी गंजी का विवाह मुफ्त में करा देंगे। अनारो कहती हैं- "चंद-दान पर अनारो की बेटी का ब्याह ? यही करना होता तो दोनों बच्चों के हाथों में भीख का कटोरा थमाकर न निकाल देती।अपनी हड्डियों का चूरा बनाकर न पालती उन्हें। तुम करवा लोगी अपनी बेटी का विवाह इस तरह? गंजी कोई अनाथ है ,कोई कानी-लूली है।चौबारे की ईट नहीं तो नाली का पत्थर भी नहीं है अनारो की बेटी।वह सब करके दिखला देगी जमाने को, चाहे इसके लिए उसे मुंबई जाकर उस भगोड़े को भी खोज कर क्यों ना लाना पड़े।" पैसे न होने पर भी बेटी के ब्याह के समय भरपूर खर्च करती है और उस कर्ज को उतारने के लिए दोगुनी मेहनत से काम करती है। 'बानो' कहानी में बानो विधवा का जीवन त्याग कर फिर से अपने लिए नया जीवन साथी सुनती है और उसके साथ रहने के लिए चली जाती है। बच्चों के बुलाने पर भी वह घर वापस नहीं आती। प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है यह स्त्री अपनी विधवा की स्थिति छोड़ देती है और स्वयं पुनःविवाह करती है 'नालायक बहू' में कामिनी अपने पति के निकम्मा होने के कारण सदा निंदा की पात्र बनती है। उसकी सास और ननद हमेशा ही कामिनी को ताना देते हैं। जबकि वास्तव में उसका पति शेखर ही एक ही जगह पर रूकर ज्यादा दिन तक काम ही नहीं कर पाता था। जिसकी वजह से उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर बनी रहती है ।शेखर खाने का बहुत शौकीन है।अपना यह शोक पूरा करने के लिए वह कहीं से भी पैसे उधार ले आता है। "उधार लाया हूं। तुम ऐसा करो, थोड़ा असली घी भी ले आओ, उसके बगैर दाल में छौंक का मजा आता ही नहीं ।" पति के ऐसे व्यवहार के बावजूद वह पति में आत्मविश्वास भरने का काम करती है।परिवार की हालत सुधारने के लिए वह स्वयं नौकरी ही नहीं करती अपितु अंत में एक बच्चा गोद लेने का निर्णय भी स्वयं करती है।

मंजुल भगत के स्त्री पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पात्र विसंगति में जीते हुए भी किसी प्रकार के अपराध बोध और कुंठा से मुक्त हैं। नारी के साथ

अपराध बोध का जो मिथक बना हुआ था। वह इन नारी पात्रों में नहीं मिलता। 'नागपाश' कहानी की शिवा जो प्रशांत से प्रेम विवाह करने के बाद प्रशांत की शराब पीने की आदत, शिवानी के साथ केवल शारीरिक संबंध, घरेलू अशांति ने शिवानी में इतनी ताकतवर दी कि वह अपने अजन्मे बच्चे को भी इस नागपाश से मुक्त करना चाहती है।

"और,आज भगवान् की मूर्ति पर फूल चढ़ाते समय पता नहीं अर्धचेतन मन की कौन-सी परत पर से तैरता हुआ यह मिसरा उसके मस्तिष्क में कौंधने लगा,ऐ मेरे बच्चे, मेरे लख्ते जिगर, तू पैदा ना हो।" अपने बच्चे को,जिगर के टुकड़े को तरसती हुई लगड़ी जिंदगी जीने से बचाने का उसने फैसला कर लिया था।"उसके और प्रशांत के शरीर का खून,उनके प्रणय का प्रेमोहार, वहां उस कमरे की बाल्टी में पड़ा था ---और यह उसने स्वंय किया था।" क्योंकि वह नहीं चाहती थी जिस नागपाश में वह जकड़ी हुई है उसका बच्चा भी वैसे ही जिंदगी जीने के लिए विवश हो जाए।

निष्कर्ष -

मंजुल भगत के कथा साहित्य में सभी नारी पात्र अपने युगीन जीवन का प्रतिनिधित्व करते हुए जीवन से संबंधित अपने युग की परिस्थिति एवं परिवर्तन को व्यक्त करने में सफल होते हैं। स्त्री का पुरुष पर आर्थिक स्वावलंबन उसकी दुर्व्यवस्था का प्रमुख कारण है।शिक्षित स्त्रियों में यह प्रमाण कम दिखाई देता है। शिक्षा के कारण विचारों में बदलाव आ रहा है। स्त्री अपने अस्तित्व के प्रति जागृत हो रही है।काम करके प्रतिष्ठा एवं पैसा दोनों ही कमा रही है। इनके नारी पात्र स्वालंबी नारी के रूप में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को बनाए रखती हैं। स्त्री का स्वंय के प्रति आत्मविश्वास उसे सफलता की चौटी तक पहुंचाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि, लेखिका का अपनी कहानियों में स्त्री को केंद्र में रखते हुए उसकी सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति के कारण बदलते जीवन परिवेश को चित्रित करना ही प्रधान उद्देश्य रहा है, जो सफल हुआ है

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1-मंजुल भगत, अनारो और गंजी (सामायिक बुक्स प्रकाशन संस्करण: प्रथम,2010) प्रश्न संख्या-122

2-कमल किशोर गोयनका, मंजुल भगत समग्र कथा-साहित्य (1) संपूर्ण उपन्यास (किताबघर प्रकाशन संस्करण-2018)

3-वही पृष्ठ संख्या-186

4-वही पृष्ठ संख्या-241

5-वही पृष्ठ संख्या-67

6-वही पृष्ठ संख्या-68

7-वही पृष्ठ संख्या-70

8-मंजुल भगत, अनारो और गंजी (सामायिक बुक्स प्रकाशन संस्करण: प्रथम, 2010) पृष्ठ संख्या-39

9-कमल किशोर गोयनका, मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य (2) संपूर्ण कहानियां (किताबघर प्रकाशन संस्करण-2018)

10-वही प्रश्न संख्या 29

11-वही पृष्ठ संख्या38

डॉ नम्रता जैन : एक परिचय

हिन्दी–समीक्षक, समालोचना एवं संपादन कला में दक्ष डा. नम्रता जैन तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद, उत्तरप्रदेश के फेकल्टी ऑफ एजूकेशन में सहायक प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत है आपकी शिक्षा एम.ए. (हिंदी, संस्कृत, योगा) यू.जी.सी. नेट, (हिंदी एवं शिक्षा शास्त्र) एम.एड़ पी.एच.डी. (हिंदी) है आपको शिक्षा के क्षेत्र में 16 वर्ष का अनुभव है। आपने अनेक अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कार्यशालाएँ, सेमिनार, वेबीनार आयोजित किये है एवं प्रतिभाग भी किया है। लेखिका के रूप में आपकी मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श, प्रयोजन मूलक भाषा एवं अनुवाद, उत्तर प्रदेश राज्य उच्च शिक्षा परिषद के बी.ए. प्रथम वर्ष की मूल मनोवैज्ञानिक प्रकियाएँ, उत्तर प्रदेश SCERT द्वारा संचालित डी.एल.एड़ प्रथम सेमेस्टर हिन्दी शिक्षण, डी.एल.एड़ चतुर्थ सेमेस्टर हिन्दी शिक्षण एवं आरंभिक स्तर पर हिन्दी एवं गणित के पठन–पाठन एवं लेखन की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। साथ ही उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड प्रयागराज द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओ जैसे TGT+PGT हिंदी एवं संस्कृत विषय पर प्रतियोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। संपादिका के रूप में आपकी अनेक पुस्तके वैश्विक विचारधाराओ का मूल : भारतीय ज्ञान परम्पराएँ, वैश्विक चिंतन एवं भारतीय ज्ञान परम्पराएँ, भारतीय ज्ञान परम्पराएँ का वैश्विक दृष्टिकोण, यर्थाथ के धरातल पर मानवीय विचारों की दिशाएँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षा के विभिन्न आयाम National Education Policy 2020: Different Dimensions of Education, कोर साइंस संपादित की गई हैं। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपके लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित हो चुके है | आप Universe Journal of Education & Humanities एवं Shiksha Shodh Manthan Journal of Education & Humanities में Editorial Board Member भी है। बोहल शोध मंजूषा द्वारा आपको इंनटरनेशनल प्राइड़ टीचर अवार्ड से सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के स्तर पर भी आप अकादिमक कार्य हेतु अनेक उत्तरदायित्वों का निर्वाहन भी कर

डॉ0 कल्पना जैन तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय से संबद्ध तीर्थंकर महावीर इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी (डी0एल0एड0) में प्राचार्या के पद पर कार्यरत है । आपकी शिक्षा एम0ए0 (हिंदी, राजनीति शास्त्र), एम0एड0, पी0एच0डी0 हैं। आपको शिक्षा के क्षेत्र में 30 वर्ष का अनुभव है । लेखक के रूप में आपकी एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है । और विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित हो चुके हैं ।

डॉ0 रत्नेश कुमार जैन तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध तीर्थंकर आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन में प्राचार्य के पद पर कार्यरत है। आपकी शिक्षा एम0एस0सी0 (वनस्पति शास्त्र), एम0ए0योगा, यू0जी0सी0 नेट, एम0एड0, पी0एच0डी0 है । आपको शिक्षा के क्षेत्र में 16 वर्ष का अनुभव है । लेखक के रूप में आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है । और विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित हो चुके हैं ।

मूल्य 995.00 रुपये

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

वी -508 गली नं. 17, विजय पार्क, दिल्ली -110053

मो.08527460252, 9990236819

ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस: ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन-201102

ISBN 978-93-92611-17-9